ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.1, JAN-JUNE,2023 /63

पंडित जवाहरलाल नेहरू के की विदेश नीति (भारत चीन संबंध) वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

–*प्रमोद कुमार एवं **डॉ0 प्रमोद सिंह
*शोध छात्र– राजनीति विज्ञान एवं ** शोध पर्यवेक्षक
टी0 एन0 पी0 जी0 कॉलेज टाण्डा अम्बेडकरनगर

भारत और चीन के मध्य संबंध अत्यंत प्राचीन काल से मधुर संबंध थे। भारत और चीन के संबंध ने भारतीय विदेश नीति को बहुत प्रभावित किया, शायद उतना कोई और देश के साथ नहीं किया भारत और चीन के मध्य प्राचीन काल में मैत्रीपूर्ण संबंध रहा।भारत और चीन दोनों ही देश कई हजारों वर्षो पुरानी सभ्यता के उत्तराधिकारी रहे हैं। और सांस्कृतिक परंपराएं को जीवित रखे हैं। यह दोनों देश विश्व के सबसे बड़ी आबादी वाले देश हैं जिसमें चीन कट्टर साम्यवादी रहा तो भारत गुटनिरपेक्ष रहा। दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और आर्थिक आदान प्रदान होता रहा। यह संबंध भले ही घनिष्ठ और व्यापक ना रहें हो परंतु दोनों देशों बीच सदभावना और भाईचारा बना रहा।[1] ब्रिटिश काल में भारत के साथ चीन का जो संबंध बना रहा एकमात्र उद्देश्य चीन की जनता को साम्राज्यवादी शोषण करना था चीन की जनता पर अपनी गुलामी लादने के लिए ब्रिटिश भारतीय सरकार ने भारतीय साधनों का प्रयोग किया। चीन को युद्ध में पराजित करने तथा चीनी राष्ट्रवाद को कुचलने के लिए भारतीय सेना का प्रयोग करने में तनिक भी संकोच नहीं किया। परंतु भारत की जनता इस साम्राज्यवादी नीति में किसी तरह का सहयोग नहीं करनी चाहती थी। लेकिन सरकार को रोक नहीं सकती थी।

आधुनिक काल में भारत और चीन के बीच संबंध 1937 में हुए पद दलित राष्ट्रों के ब्रुसेल सम्मेलन में हुआ । इस सम्मेलन में भारत और चीन के प्रतिनिधियों की संयुक्त विज्ञप्ति निकाली गई, और पश्चिमी साम्राज्यवाद एशिया मुक्त के लिए भारत और चीन का सहयोग जरूरी था इसी विज्ञप्ति में चीन में ब्रिटिश शासकों द्वारा भारतीय सेनाओ की निंदा की गई, और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने कई प्रस्तावों को स्वीकार करके चीन के प्रति ब्रिटिश सरकार की आलोचना की। सन 1937 में जब जापान द्वारा मंचूरिया पर आक्रमण किया तो चीन के प्रति सहानुभूति प्रदर्शन करने के लिए चीनी दिवस मनाया गया और भारत ने जापानी वस्तुओं का बहिष्कार किया और स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद स्वाधीन भारत अपने इस पड़ोसी देश के साथ अच्छे संबन्ध कायम करने का प्रयास किया चीन में साम्यवादी सरकार की स्थापना 1948 में कुओमिन्तांग सरकार के पतन के बाद हुआ। भारत में नवस्थापित सरकार का स्वागत किया उसे मान्यता प्रदान करके अपने मैत्रीपूर्ण व्यवहार का परिचय दिया अतः कुओमिन्तांग सरकार के समय में चीन मे भारतीय राजदूत के. एम. पाणिकर काम कर रहे थे पुनः 1949 मे उन्हें दुबारा भारतीय राजदूत बना कर भेजे गए। के. एम. पाणिकर के प्रयास से भारत और चीन के बीच मैत्री संबन्ध की शुरुआत हुई भारत ने हमेशा से ही चीन का साथ दिया और उसकी सहायता करने का प्रयास किया। गैर साम्यवादी देशों में भारत एक मात्र देश था जिसने साम्यवादी चीन को शीघ्र मान्यता प्रदान किया और चीन को नए गणराज्य को संयुक्त राष्ट्र संघ में उनका उचित स्थान दिलाया इसी के कारण भारत को कई देशों के साथ विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ मनमुटाव पैदा हुआ भारत अमेरिका का अवहेलना करते हुए चीन का समर्थन किया।

नेहरू युग भारत चीन संबंध (1947 से 1964) –

स्वतंत्रता प्रापति के बाद भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू अपने पड़ोसी देशों के साथ मधुर संबंध बनाने का प्रयास किया। जिनमें पंडित नेहरू चीन से संबंध बनाने की कोशिश की 1954 से सन 1957 का काल भारत और चीन के लिए अच्छा संबंध माना जाता है, 29 जून 1954 को दोनों राष्ट्रों के एक आठ वर्षीय व्यापारिक समझौता हुआ जिसमें भारत ने तिब्बत से अपने अतिरिक्त देशी अधिकार को चीन को सौंप दिया। इस व्यापारिक समझौते से ही पंचशील सिद्धांतों की रचना की गई थी। भारत ने तिब्बत में चीन की संप्रभुता को स्वीकार कर लिया। सन 1954 में चीन के तत्कालीन प्रधानमंत्री भारत की यात्रा की तो संयुक्त रूप से पंचशील सिद्धांत पर बल दिया गया। अक्टूबर 1954 में पंडित नेहरू ने चीन की यात्रा की। अप्रैल 1955 में बांडुंग सम्मेलन में नेहरू और

चाऊ एन लाई ने पूर्ण सहयोग के साथ कार्य किया,[2] बाद में गोवा के प्रश्न पर चीन ने भी साथ दिया और क्यूमाये और मात्सू टापूओं पर भारत ने चीन का समर्थन किया। विंसैट शोयब के अनुसार चीनियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध कायम करने का जितना प्रयास पंडित नेहरू ने किया संभवता विश्व में उतना किसी ने भी नहीं किया होगा।

प्रारंभ में कई वर्षो तक भारत और चीन के संबंध बहुत मधुर बने रहे फिर भी तिब्बत से संबंधित प्रश्नों पर मतभेद की स्थित पाई गई। भारत और चीन के बीच तिब्बत स्थिति है इस पर चीन की प्रभुसत्ता बहुत पहले से ही रही हैं। बीसवीं शताब्दी के शुरुआत में जब रूस का प्रभाव तिब्बत पर पड़ने लगा तो ब्रिटिश सरकार को आश्चर्य होने लगा। लॉर्ड कर्जन ने सन् 1950 में एक सैनिक टुकड़ी भेजकर दलाई लामा को एक संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य किया गया। तब ब्रिटेन और चीन के बीच 1905 में एक संधि हुई जिसके द्वारा ब्रिटेन ने तिब्बत पर चीन के अधिकार पत्र को स्वीकार कर लिया ब्रिटेन और चीन के बीच 1905 में एक संधि हुई जिसके द्वारा ब्रिटेन ने तिब्बत पर चीन के अधिपत्य को स्वीकार कर लिया।[3]

इस संधि द्वारा इस बात पर सहमति बनी कि तिब्बत की राजधानी लासा पर एक भारतीय एजेंट रहेगा यादूग, ग्यान से और गारटोक मैं भारत की व्यापारिक एजेंसियां स्थापित की जाएंगी तथा ग्यानटसे तक डाकतार घर स्थापित करने का अधिकार भी भारत का रहेगा इन सुविधाओं के अतिरिक्त भारत सरकार को अपने व्यापारिक मार्ग की सुरक्षा के लिए तिब्बत में कुछ सेना का अधिकार भी भारत का रहेगा लेकिन इस संधि पर कहीं तिब्बत और चीन के संबंधों को स्पष्टीकरण नहीं किया, और आंतरिक मामलों पर तिब्बत को पूर्ण स्वतंत्रता रहेगी। चीन की नई साम्यवादी सरकार ने तिब्बत पर अपना अधिकार कर लिया, और तिब्बत को अपने राज्य का अंग बताया 1 जनवरी 1950 को चीन सरकार ने तिब्बत को साम्राज्यवादी संयंत्रों से मुक्ति दिलाने की घोषणा कर दिया भारत ने चीन के इस नीति का विरोध किया[4] भारत तिब्बत पर अपना विशेषा अधिकार को छोड़ने को तैयार नहीं था वह तिब्बत में चीन की प्रभुसता को स्वीकार करने को तैयार था परंतु साथ ही यह चाहता था कि उसे स्वायत शासन इकाई प्रदान किया जाए। लेकिन चीन ने इस बात का परवाह नहीं किया, और 25 अक्टूबर 1950 को तिब्बत के विरुद्ध सैनिक कार्रवाई शुरू कर दिया भारत ने इस सैनिक कार्रवाई का विरोध किया।

चीन ने भारत पर आरोप लगाया कि वहां साम्राज्य वादियों के बहकावे में आकर चीन के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप कर रहा है इस वातावरण में कुछ दिनों तक तनाव की स्थिति बनी रहे लेकिन या स्थिति अधिक दिनों तक बनी नही रही। सन 23 मई 1951 को चीन और तिब्बत में एक समझौता हुआ और यह निराशा हुआ कि तिब्बत वैदेशिक संबंधों व्यापार सुरक्षा और यातायात पर चीन का पूर्ण

नियंत्रण रहेगा, शेष मामलों पर तिब्बत पूर्ण स्वतंत्र रहेगा। चीन भारतीय हितों को संरक्षण प्रदान करेगा। 1954 ई. में चीन चाऊ एन लाई ने भारत की यात्रा की और पंचशील सिद्धांत का प्रतिपादन किया। भारत और चीन के मध्य सीमा को लेकर विवाद शुरू हो गया था 1950 से 1951 ई. में साम्यवादी चीन के नक्शे में भारत के एक बड़े भूभाग पर चीन का अंग दिखाया गया था। भारत सरकार ने चीन का ध्यान इस ओर आकर्षित किया तो उसने यह जवाब दिया कि यह नक्शा गलती से बन गया। चीन की सरकार ने कहा शीघ्र ही सुधार कर ली जाएगी तब भारत सरकार ने चीन की इस हरकत पर संदेह नहीं किया। लेकिन चीन ने भी कभी अपना नक्शा नहीं बदला और भारतीय भूभाग पर चीन का दावा बढ़ता गया। 1954 ई. में चीन ने सीमा के विभिन्न भारतीय प्रदेशों अपनी सैनिक दस्ते और टुकड़िया भेजनी शुरू कर दी 23 जनवरी 1959 के पत्र में चीनी सरकार ने देखा कि भारत और चीन के मध्य कभी भी सीमाओं का विवाद नहीं हुआ है और तथाकथित सीमाएं चीन के विरुद्ध किए गए साम्राज्यवादी षड्यंत्र का परिणाम मात्र माना।

20 अक्टूबर 1962 में भारत पर साम्यवादी चीन ने बड़े पैमाने पर आक्रमण कर दिया इससे पूर्व 12 जुलाई 1962 को लद्दाख में गलवान नदी की घाटी को भारतीय चौकी को चीनियों ने अपने घेरे में ले लिया 21 नवंबर 1962 को चीन ने एकाएक अपनी ओर से एक पक्षीय युद्धविराम की घोषणा कर दी और युद्ध समाप्त हो गया।

भारत चीन का संबंध (वर्तमान परिप्रेक्ष्य) मे

भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी 14 से 16 मई 2015 तक चीन की यात्रा की दोनों देशों के मध्य 10 अरब डालर के 24 समझौते पर हस्ताक्षर हुए, 16 मई को भारत और चीन की कंपनियों के 22 अरब डालर के 26 समझौते हुए मोदी ने चीन के निवेशकों को भारत के लिए आमंत्रित किया श्री नरेंद्र मोदी ने चीन के नागरिकों को ही वीजा देने की घोषणा की । कैलाश मानसरोवर जाने वालों के लिए नाथूल दर्रे मार्ग जून 2015 से खोल दिया जून 2017 में सिक्किम में चीन और भारत के बीच चल रहे विवाद में नाथू– ला दर्रे से होकर होने वाली कैलाश मानसरोवर की यात्रा को रोक दिया, इसी समय डोकलाम में सीमा पर तनातनी शुरू हो गई जिसमें भारत ने चीन के सड़क निर्माण पर विरोध जताया और सैनिकों ने भारतीय क्षेत्र में प्रवेश कर दो भारतीय बंकरों को नष्ट कर दिया। डोकलाम मे झगड़े की जड़े भूटान में एक दुर्गम चरागाहओ (लगभग 250 किलोमीटर) का छोटा सा टुकड़ा है लेकिन इसकी भौगोलिक स्थिति को भारत और चीन दोनों के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है।

28 अगस्त 2017 को दोनों देशों की सेना डोकलाम में अपने स्थान से पीछे हट गई 27–28 अक्टूबर अप्रैल 2018 को भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शी जिनपिंग से अनौपचारिक रूप से बातचीत के लिए बुहान में थे, एक नई शुरुआत के लिए चीन ने अभूतपूर्व सदभावना का परिचय दिया और शी जिनपिंग ने मेजबानी के लिए दूसरी बार बीजिंग से बाहर बुहान में मोदी का स्वागत किया। भारत और चीन एक बार फिर से बातचीत की दिशा में आगे बढ़े।

भारत और चीन के बीच निकट विकास साझेदारी के समग्र ढांचे के अंतर्गत द्विपक्षीय संबंध 2019) में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच चेन्नई में 11 से 12 अक्टूबर 2019 को दूसरे अनौपचारिक शिखर सम्मेलन के साथ संबंध गहरा हुआ।[5]

निष्कर्ष.

भारत और चीन के मध्य संबंध प्राचीन काल से मधुर था भारत और चीन दोनों ही देश सांस्कृतिक एवं परंपराओं को जीवित रखने का प्रयास किया। दोनों देश विश्व के सबसे अधिक आबादी वाले देश हैं और दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और आर्थिक आदान–प्रदान होता रहा है आधुनिक काल में भारत और चीन के बीच संबंध 1937 में हुए राष्ट्रों के ब्रुसेल्स सम्मेलन में हुआ भारत की स्वतंत्रता प्राप्त के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू प्रथम प्रधानमंत्री बने। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने चीन के साथ मधुर संबंध बनाने का प्रयास किया प्रारंभ में कई वर्षो तक भारत और चीन के मध्य मधुर संबंध बने रहे। भारत और चीन के मध्य तिब्बत को लेकर विवाद शुरू हुआ 1 जनवरी 1950 को चीन सरकार ने तिब्बत को साम्राज्यवादी षड्यंत्र से मुक्ति दिलाने की घोषणा कर दी भारत ने चीन की इस नीति का विरोध किया चीन और भारत ने 1954 में सीमा संबंधित विवाद हुआ भारत और चीन के संबंधों में काफी उतार चढ़ाव होता रहा है लेकिन वर्तमान समय में भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा भारत और चीन के संबंधों में सुधार के लिए प्रयास किया जा रहा है

संदर्भ ग्रंथ

1– जैन, पुष्पेश पंत, अंतरराष्ट्रीय संबंध, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ, 2002
2– फडिया बी. एल. अंतरराष्ट्रीय संबंध साहित्य भवन, आगरा, 1993
3– दीक्षित जे.एन. भारतीय विदेश नीति प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 2003, पृष्ठ 392
4– नेहरू, जवाहरलालः भारतीय विदेश नीति नई दिल्ली, 1958 पृष्ठ 239
5– घई, यू आर : भारतीय विदेश नीति, न्यू एकेडमिक पबलिशिंग कंपनी, जालंधर 2003, पृष्ठ 231
6– बर्मा, दीनानाथ अंतरराष्ट्रीय संबंध, ज्ञानदा प्रकाशन, पटना, 2004 पृष्ठ 126
7– मिश्रा के. पी : भारत की विदेश नीति, नई दिल्ली 1963
8– डॉक्टर पुष्पेश पंत श्रीपाल, जैन, प्रमुख देशों की विदेश नीति मीनाक्षी प्रकाशन 2002 मेरठ पृष्ठ 512–513
9– बी. एल. फडिया, अंतरराष्ट्रीय राजनीति साहित्य भवन आगरा 2021 पृष्ठ 312
10– दीनानाथ वर्मा, अंतरराष्ट्रीय संबंध ज्ञानदा प्रकाशन नवप्रभात प्रिंटिंग प्रेस शाहदरा, नई दिल्ली 2001 पृष्ठ 337
11–. सी. बी. पी श्रीवास्तव, किताब महल, इलाहाबाद, 2002 से 2004 पृष्ठ 234235
12– विदेश मंत्रालय, भारत सरकार वार्षिक रिपोर्ट 2019–20 पृष्ठ 47